रामाश्वमेघ

कविता कोश

* अध्यात्म * हास्य व्यंग्य * विसंगतियाँ

सुरेश कुमार गुप्ता (8097893453)

ईमेल : skgakoli@gmail.com

रामाश्वमेघ

काव्य

अध्यात्म, इतिहास, पुरातन कथा,

उद्‌गार, विसंगतियों या हास्य व्यंग्य

****

सुरेश कुमार गुप्ता

362, डीएसआर सनराइज टावर्स,

चन्नासंद्रा मेन रोड, ए के गोपालन कॉलोनी,

व्हाइटफ़ील्ड, बेंगलुरु, कर्नाटक 560066

मोबाइल नंबर : 8097893453

ईमेल : skgakoli@gmail.com

भूमिका

प्रस्तुत संकलन काव्य रूप में
अध्यात्म, इतिहास, पुरातन कथा,
उद्गार, विसंगतियों या हास्य व्यंग्य
की प्रस्तुति है।

मन भटकता है ।
मन विषाद ग्रस्त हो जाता है,
जब जब मन समाज की
विसंगतियों से दो चार होता है।

जरूरी तो नही कोई क्या नाम दे
इस तुक बंदी को,
भावनाओ में वर्षो का सार
संकलित होता है।

मन कभी आध्यात्म में झुके
कभी इतिहास में झांक आये।
दूर दूर विसंगतियों में जाए।
व्यंग्य उजागर कर जाए।

कभी मन हास्य से खिलखिलाए।
बेबस है इंसान कुछ कर तो न पाए,
पर बोलने से मगर
कहां चुप रह पाए।

अनुक्रमणिका

19	विसंगति	रोजगार मेला
20	विसंगति	आज साम्राज्य ले उड़े
21	विसंगति	मूड़ी का मूड जो बदला
22	विसंगति	कांग्रेस आ रही है
23	विसंगति	बरसो रे बदरिया सावन में
24	व्यंग	ससन्मान जेल में धरे
25	व्यंग	हॉल में चप्पू चलाते रहै
26	व्यंग	सखी रे कान्हा नही आए
27	व्यंग	धर्मगुरु खीर खाये रे
28	व्यंग	अब नया लेशन दे जाओ
29	व्यंग	रामबाबू जन्मदिन मुबारक
30	व्यथा	कौन मशाल थमा गया
31	व्यथा	दो मोमबत्ती जला आये
32	व्यथा	शोक दिवस दो दिन बाद
33	व्यथा	सच की जगह बची नही
34	व्यथा	वो चिराग लौटा लाई
35	व्यथा	दर्द का पैमाना
36	व्यथा	कौन मौत से खेला
37	व्यथा	भांग घुली है कुए में

38 व्यथा टूटते समाज की घुटन

39 व्यथा समयोचित संस्कार

40 हास्य जो इतिहास लिखेगा

41 हास्य बस एक चेहरा आप है

42 हास्य बस थोड़ी जगह दिला दे

43 हास्य कफन बदले जाए

44 हास्य शेर की सवारी कर बैठे

45 हास्य रामबाबू की दाढ़ी

46 हास्य सत्ता और पूंजी की जोडी

47 हास्य डर डायन बनकर आ रहा है

48 हास्य नया मोबाइल

1.रामाश्वमेघ

भगवान सत्तासीन हुए घर घर खुशियां छाई
लंकेश को दंड देकर रामराज्य कायम किया
रावण वध से ब्रह्महत्या का पाप वे भूले नही
निद्रा आँखों से ओझल मन अतीत टटोलता

उच्च आदर्श के वश रानी का परित्याग किया
वे पत्नी वियोग में बारह वर्ष व्यतीत कर गए
ब्रहहत्या ऋषि कंबोधर ने अन्न ग्रहण न किया
ऋषि राज ड्योढी से लौटे मन क्षुब्ध कर गए

राम ने पापमुक्ति में प्रायश्चित का मन बनाया
गुरु आज्ञा पा अश्वमेध यज्ञ का संकल्प किया
ऋषियों-मुनि, राजन गणमान्य आमंत्रित हुए
अश्वमेघ की करो तैयारी राज से उद्घोष हुआ

पूजा कर अश्व छोड़ा सैना अश्व के साथ रही
अश्व वाल्मीकि आश्रम आया व्यवधान आया
अश्व को लव कुश ने आश्रम के समीप देखा
खेलते ऋषि बालक अश्व देख आकर्षित हुए

ऋषि बालको ने सलाह कर अश्व पकड़ लिया
सैन्यबल ने समझाया अश्व का परिचय कराया
करो लड़ाई रणभूमि से अश्व छुड़ाकर जाओ
बालको से कैसे लडे सैन्यबल मुश्किल में था

वे छुड़ा न सके अश्व को बालको ने ललकारा
जो लड़ने का मन बनाया बलशाली हारते गए
सेनापति घायल हुआ शत्रुघ्न युद्ध करने आये
शत्रुघ्न वीर बालकों के बाण से मूर्छित हो गए

जो हनुमान आये बालको ने उन्हें बंदी बनाया
जीत दूभर हो गई आखिर राजा स्वयं आया
चकित था बल देख उनका परिचय पूछ रहा
सूर्यवंशी राजपुत्र है माता संग आश्रम में रहते

धरा पे कौन हरा सके हम क्षत्रिय नही डरते
राजा उनसे ऋषि से मिलने की चाह बताते
आए जब आश्रम मुनि वाल्मीकि से भेंट हुई
मुनि ने बालको का राजा से परिचय कराया

आश्रम में सती सीता राम का मिलन हुआ
ऋषि आज्ञा पाकर अश्व को आज़ाद किया

****

2. आमिष खंड

आमिष खंड ले बाज़ उड़ता रहा
राह में बाज़ों को आमंत्रण दिया
बाज़ों का झुंड पीछे पडता गया
आमिष बचाने बाज़ उड़ता गया

आखिर हौंसला जवाब दे गया
न खा सका न ही संभाल सका
थक हार बैठा शकुन मिल गया
त्याग में शांति है वो समझ गया

आमिषखंड चोंच से फिसल गया
दूसरा बाज़ फिर उसको ले उडा
दूसरे बाज़ के पीछे सब पड़ गए
पात्र बदला पर संग्राम शुरू रहा

गहरे में एक विचार कौंध गया
हम सब भी बाज़ से बनते गए
एक को मिले बाकी छिनने लगे
यह अंधी दौड़ थी सब लगे हुए

जिस ने हार मानी वो बैठ गया
तब उसे शकुन नसीब हो गया
जिसने संतोष वरण नही किया
जीवन भर भागने में खप गया

****

3. मन का तम

मानव सभ्यता के आयाम जो छु गया
मानव प्रकृति को बौना समझता गया

सबने एक हो उस रात दीये जलाये थे
पर निशा का तिमिर कब जीत पाए थे

लाखो घरो ने लाखों दिए जलाए मगर
अंधकार से पार पाना आसान नही था

अमावस्या की उस तारो भरी रात को
असंख्य तारे भी रोशन न कर पाए थे

सबको बौना होने का अहसास दे रही
अमावस्या की स्याह रात रोशन न हुई

धरा पर एक सूरज एक चाँद ही रहेगा
रोशन होकर तम का नाश कर जाएगा

मानव के अहम सा फैला यह अंधकार
कौन सक्षम होता कि उसे जीत पाएगा

एक गुरु एक सूरज और एक चाँद हो
मन का तम पल में ओझल हो जाएगा

गुरु सानिध्य अहं तिरोहित कर जाएगा
आत्मा परमात्मा का मिलन हो जाएगा

4. यह अंतिम गति है

मर्सिडीज जो डिवाइडर से टकराई
मृत आत्मा धर्मराज के पास आई
देव गाड़ी सेफ्टी फीचर्स से लैस थी
फिर भी हादसे में जान न बच पाई

हर कोई धरा छोड़कर यहां आता है
जब जब रिचार्ज खत्म हो जाता है
जब आ गयी तो कोई न बचा पायेगा
यह अंतिम गति है यहां लौट आएगा

तकनीक चाहे कितनी बेहतर हो जाए
बचोगे जो सावधानी से चलते जाओ
कंपनी स्पीड चाहे अढ़ाई सौ बताए
उतने में चलो जहां सुरक्षित रह पाओ

भरोसा तकनीक पर तो जरूर करो
जब तक जिओ तो सावधानी से रहो
अपनी काबिलियत पर भरोसा करो
सुरक्षित चलो दीर्घ सुखी जीवन जियो

****

5. हर धर्म उद्धभव होता है

प्रेमवृत की परिभाषा नही परिधि होती है
सीमा में आता है प्रेम से सराबोर होता है

प्रेम की नजरों से बस प्रेमी नजर आता है
घृणा रहती नही जीवन खुशनुमा होता है

प्रेम की भाषा नही अनकही चाह होती है
अबोल पशु भी जिसे पढ़ते समझ लेते है

प्रेम में दिल से आंखों का मिलन होता है
दिलो में सैलाब है आंखों में उद्गार होता है

प्रेम की धर्म जाति नही परिकाष्ठा होती है
दुनिया के हर धर्म की सीमा खत्म होती है

प्रेम शाश्वत जिसकी धुरी में टिका होता है
यहां से विश्व का हर धर्म उद्धभव होता है

****

6. जय सीता मैया

तेरे कदमो में स्वर्ग है मैया तेरे गुण गाता जाऊं
मैया सुध लेना हमारी तेरी आशीष पाता जाऊं

त्याग की मूरत तुम पति समर्पण की सूरत तुम
जब तुमको निहारु अपना अहं विसारता जाऊं

दिल मे सजा मूरत तेरी रोज दर्शन करता जाऊं
जो मिले कृपा तेरी जीवन सफल बनाता जाऊं

टूट पड़े पहाड़ दुखों के तुझसे संबल पा जाऊं
कौई नही जग में ऐसा तुझ संग जीत न पाऊं

काया माया जीत जाऊं मैया तुझे करीब पाऊं
भरोसा नही जग में तुझसे आस लगाता जाऊं

टूटे नही आस हमारी मैया साथ तुम देते जाना
भवसागर में डोले नैया पतवार संभाल जाना

****

7.जीवन रब के कदमो तले

कोई चालीस में कहता मै थक गया हूं
कोई अस्सी में कहे बूढा कहाँ हुआ हूं

समय पैमाना नही क्यों पैमाइश करते
जवान बूढा है तो बूढा जवान होता है

शरीर की उम्र नापने के क्या मायने है
जब मन जवान रहने की ठान लेता है

उम्र दराज़ हुए तो क्यों मन निर्बल है
देना विटामिन मन को शरीर स्वस्थ है

क्यों रिटायर होने के सपने देखते रहै
रिटायरमेंट जीवन के अंत का नाम है

छोड़ देना ये जीवन रब के कदमो तले
बिन मांगे मिलेगा जो रब तुम्हें चाहेगा

न वाहन कैसे जीवन से भाग पाओगे
जो बेफिक्र रहे मुर्दे में जान डाल देगा

****

8. मा विद्विषावहै

अहं की गठरी सिर पर लाद चलते
जीवन मे हर पल बोझ बढ़ा चलते
कुछ कहा किसी ने कुछ कर दिया
बांध गठरी दिल मे सहेज़ते चलते

कैसे वह जमीर को ललकार गया
वक्त आएगा तो बदला जरूर लेंगे
रोज सुबह शाम जुगाली करते रहे
बुरा भला कहते बिगाड़ क्या लेते

अस्सी टका गठरिओ से भरते गए
वक्त की मांग दिमाग खाली रखते
काश मुर्दोवाला संस्कार सीख लेते
गठरियों गहरे गड्ढो में दबाके आते

बेफिक्र जीवन फिर लहलहा उठता
खुले में जीवंत हो ठहाके लगा लेते
कर्मण्योवाधिकारस्ते कभी बोलते
मा विद्विषावहै में जीवन खोज लेते

****

9. अजो नित्यः शाश्वतोऽयं

श्रीकृष्ण कहते अजो नित्यः शाश्वतोऽयं
फिर क्यों हर रोज आत्मा मर जाती रहै

संस्कारो के बोझ की गठरी न उठा सके
जैसा व्यवहार देखते आत्मा हिलती रहे

अष्टशत दादी के नराधम पैर काट गया
लालच की पराकाष्ठा कलयुग बता रहा

संत मंच से बच्चे पैदा करो कहता रहा
दुविधा मे संत न गृहस्थ किन्नर हो गया

मिथ्या भाषण ही सत्य संभाषण हुआ
बेशर्मी से कहना या सुनना आम हुआ

न अब धरती फटेगी न आसमाँ गिरेगा
आत्मा अमर है अब कौन कह सकेगा

संस्कारो की वेदी पे अब तुम यज्ञ करो
आत्मा में प्राण प्रतिष्ठा का प्रयत्न करो

फिर इस धरा पर कृष्ण अवतरित होंगे
यदा यदा हि धर्मस्य के सत साक्ष्य देंगे
****

10. मंजिल तो दिल जीतना है

जहां से चले झांक लो अब नजारा
वक्त के साथ विरासत हिलने लगी
गुजरात की सलीब कंधो पर लादे
रामबाबू कहां तक चलते आ गए

याद करो अलेक्जेंडर का इतिहास
जीती सल्तनते वो पीछे छोड़ आया
समय बदला बगावत सर उठा रही
समय जीत के निशान मिटाता गया

जब जब सवाल होता हुकूमत का
स्टेट की सत्ता सदा हारती आयी
रहा वोह ही सिकंदर इस जहां में
जिसने दिलो को जीत राज किया

अपनी शानोशौकत के बीच कहीं
झाँक लेना दिल की गहराइयो में
और झांकना जनता के दिलो में
सत्ता के निशान बरकरार रह पाए

सल्तनतें बदलेगी रामबाबू मगर
जनता के दिलो पर लगी ये छाप
उनकी आबरू सलामत रही तो
सदियो इतिहास में अमर रहेगी

सत्ता न कोई संयोग न प्रयोग है
वह तो दिलो से जोड़ता योग है
चुनावी जीत की स्ट्रैटजी ही सही
मगर मंजिल तो दिल जीतना है

****

11. मेरे घर का बरगद

घर के आगे बरगद जिस छांव में बचपन काटा
लगता था हर पल उससे जन्म जन्म का नाता

रोज सवेरे पेड़ से सूरज की किरणें झांक जाती
पत्तो की गाड़ी बना साइकिल से चक्कर लगाते

दिन भर चिड़िया चहके मिठ्ठू आवाज़ दे जाते
अपनेपन का नाता ये दानापानी के कुंडे लगाते

बंदर धमाचौकडी मचाते कौए डाल डाल फिरते
टहनियां पकडते या फिर जडे पकड़ झूल जाते

गर्मी में लोगबाग घूमते फिरते वहां बैठ सुस्ताते
हम भी पेड़ की छांव में खाट लगाकर सो जाते

रात में खाट पर लेट दादाजी कहानियां सुनाते
हम भी संग बैठ बदले में उनके पैर दबा आते

रात होते चमगादड़ के झुंड अपना रंग जमाते
वहां कोंपले खाते रात में उल्टे लटक सो जाते

पतो से छन चाँदनी धरा पे अमृत बरसा जाती
स्वर्ग सी छटा देख अपना अस्तित्व भूल जाते

....

12. पुरातत्व इतिहास सँवारे

पुरातत्व लग जाए अभी से इतिहास सँवारे
रामबाबू के चरण पड़े वो संरक्षित हो जाए
युगपुरुष उतरे धरा पे इतिहास लिख जाए
धरोहर बचे रामबाबू की हर छबि नजर रहे
भावी दृष्टा रहे लालकिला फतह कर आये
लालकिला गुजरात ला जहाँ झंडा फहराए
सानिध्य में वक्त गया याद संरक्षित हो जाए
केदार की गुफा में रामबाबू ध्यान लगा आए
यादगार स्कूल बना स्वयं मुलाकात ले आए
कमरा छोटा कम बच्चे पर हौंसला बढ़ा आए
जीते हुए कॉंग्रेसी तोडे हिस्ट्री से नेता उठाए
इतिहास सत्र बदला चौदह में आजाद कराए
हिन्दुओ के रहनुमा बने आदर्श प्रस्तुत किया
जहाँ जाने लोग कतराए वो फतह कर आए

****

13. मेरे गांव की बुढ़िया

मेरे गांव की बुढ़िया जिसके चर्चे आम थे
न समाज सेविका न सम्पन्न महिला थी
हर घर आंगन में भुआ बन वो आ जाती
वह बिन बोले ठौर ठौर प्यार लूटा जाती

एक रोटी नमक जीवन का गुजारा करती
शाम ढलते मन्दिर के अहाते में सो जाती
मुस्कराहट बिखेरे आलोचना से दूर रही
सब और खुशियाँ बांट सदा संपन्न रही

बिन थके बिन बोले सबका काम करती
वहां घरों में कुंए से पानी भर भर लाती
गुजरा बचपन उस छांह तले वो करीब थी
क्या समझता वो बिनलिखी किताब थी

मेरी पहली नौकरी में ख्याल एक आया
मैंने उसको एक मनीऑर्डर भिजवाया
जब फिर मिला उसको अजीब खुशी थी
बोल उठी क्यों मैने उसे पैसा भिजवाया

नब्बे बरस पार खेतो से अनाज बीन लाती
बोली क्या जरूरत उसे वह स्वसम्पन्न थी
भौतिक जगत में गणित मैं समझ न पाया
बरस भर वो दो सौ में जीवन बसर करती

मेरा दिया पैसा मेंरे नाम वह दान कर आई
कैसे असहाय गरीबी में वो अमीर रह पायी
क्या मैं उस निष्काम आत्मा से सीख पाता
अपने आप में वह जीवन का धर्मग्रंथ हुई

****

14. एपल विकास के केंद्र में

खाई एपल से स्टीव ने नाम कमाया
एपल ने आदम को स्वर्ग से निकाला

एक एपल न्यूटन की नींद उड़ा गया
एपल विकासवाद का केंद्र बन गया

वही एपल जो हिमाचल ने उपजाया
अडानी ने जहां अपना पंजा गड़ाया

न्यूटन से ज्यादा वो एपल गिरा गया
एपल काश्तकार की नींव हिला गया

एपल बिकता गया बारह के भाव में
किसान देखते कौन माल बना गया

वे नजरे गड़ाए देखते भाव आने का
सब जानते कौन फायदा उठा गया

कह रहे तूने गरीबो पर डाका डाला
मित्रवाद की भेट ये एपल चढ़ गया

अडानी वक्त की नजाकत पहचानते
आज कीमत चुकाने का वक्त आया

****

15. संस्कार में जीना जरूरी है

जीता है इस दुनिया मे अलग लिखता है
अपनी सोच का आदर्श बयान करता है
अपने तालाब में मेंढक भी मगर होता है
स्वार्थ में व्यवसायी साहित्यकार होता है

जयसुख सोच का छोटा चीनी रीचार्ज है
रसूख के सहारे मौत देने का लाइसेंस है
देश मे तानाशाही के सपने देख जाता है
समस्या और समाधान मुद्रित करता है

कानून न माने तानाशाही श्रेष्ठ कहता है
चुनाव समय पैसे की बर्बादी बताता है
आज़ाद कश्मीर की वकालत करता है
लोकतंत्र भ्रष्टाचार को कैंसर बताता है

पूंजीवाद में जीए साम्यवाद गुण गाता है
भ्रष्टाचार फैलाता है उसे कैंसर बताता है
दो करोड़ का ठेका बारह लाख में देता है
बाकी पैसा भ्रष्टतंत्र में वो डकार जाता है

वक्त बांटने का धंधा कर मौत बांटता है
वक्त बांटता या वक्त से मज़ाक करता है
हंसी खुशी के बीच मौत बांट जाता है
और तब आजादी के गीत गुनगुनाता है

कोरिया चीन रूस के कसीदे पढता है
चीन जैसा एक शासक राज बताता है
तानाशाही के रहनुमा के गुण गाता है
जहाँ रातोरात पूंजीपति गायब होता है

सत्ता पूंजीवाद सांठगांठ से तंत्र भ्रष्ट है
जनता आज़ादी में नही रहै सीखाता है
लोकतंत्र में अपराध कर बचा फिरता है
इस जगह पे बिना मरे स्वर्ग में जीता है

यह लोकतंत्र की आज़ादी का प्रमाण है
इसी लोकतंत्र को वह फालतू बताता है
सडे विचारो से आज़ाद होना जरूरी है
सच्चा हिन्दू संस्कार में जीना जरूरी है

****

16. मेंढ खेत खाने लगे

राज्य संपदा चुराए मेंढ खेत खाने लगे
प्रजा कैसे बचे जब शासक डुबाने लगे
जिस राज्य में जन्में उसको डुबाने लगे
थे बागी वे राज्य को कंगाल बनाने लगे

अपने छोड बेगानो में अपनापन ढूंढते
जिस डाल पर बैठे थे उसे काटने लगे
अकेले शिकारी के जाल में उलझ गए
हिंदुत्व पैरोकार हो राज्य बेचने निकले

अपना स्वार्थ पकड़ दूर निकल आये हो
किस भरोसे अपने पीछे छोड़ आये हो
झांक लेते आस्तीन में सांप पनपते रहे
फन कूचल न सके अब नाग डसने बैठे

व्याध के जाल में दाना चुगने चले गए
आप जाल में फंसे अपनो को ले डूबे
लोभ थामते कौम का भला कर जाते
न खोते अस्मिता न बागी गद्दार कहाते

महत्वकांक्षा में सत्ता की सीढी चढ़ गए
हिंदुत्व राग तले राज्य कुर्बान करने लगे
स्वार्थ के बंधन तोड़ जमीर ऊंचा उठाते
लौट आते जनता वाट पर इंतज़ार करे

सत्ता में राज्य भूले राज्य कहां ले आये
विकास भूले राजनीती विकास में लगे
डबल इंजन ने राज्य को धक्का लगाए
राज्य का विकास पड़ोस में पहुंचा आए

हिन्दुत्व के नाम अपने खेमे उजाड़ बैठे
राज्य उजाड़ने के विकास में ही जा बैठे
विकास तो दूर राज्य के डकैत बन बैठे
विकास भूले राज्य के प्रोजेक्ट लुटा बैठे

****

17. खबरे खबरों में खो जाए

कहे दास कबीरा बुरा जो देखन चला
गहन दर्शन है जो होता केंद्र में आप है
अगर आप वहां गए आपकी चूक है
पुल पर मर जाते तो किसकी भूल है

वहां न जाते उनका गुनाह नही होता
मरता नही कोई तो हंगामा नही होता
सरकार जैसी बनाते आपही गलत रहे
क्या दोष है उनका जो लापरवाह रहे

मोरबी पहला नही हादसो में कई मरे
हादसा आम है मरनेवाला खास नही
सिलसिलेवार आदमी तो मरता रहेगा
संवेदनहीनता पर कौन हिसाब करेगा

हादसा हुआ इंक्वायरी कमीशन बनेगा
कुछ न होगा न्याय अपनी मौत मरेगा
कमीशन किसके साथ है जानोगे नही
खबरे खबरों में खो जाए जानोगे नही

****

18. नगरवधू का सौंदर्य

सौंदर्य की प्रतिमूर्ति बनी थी वो
उसपे करोड़ो बजट लगाया गया
समय ने उसे नगरवधू बना दिया
जमाना उस पर फिदा होता गया

वह पल पल वस्त्र बदलती रही
गहनों से वह सदा लदी रह गईं
जब जब स्टेज पर आई थी वो
हर नेता अभिनेता शर्माता गया

वो रातो में महफिल सजाती रही
खुशी हो या गम ईवेंट मनाती रही
वो दिल मे कितने बवंडर संभाले
खुशी दिखाती तो गम दबाये रही

जिस जिसने देखा वो देखता रहा
उसके सौंदर्य का विष पीता गया
जिस जिसने चाहा वह लुटा गया
उसके जलवे का यह आलम रहा

सौंदर्य का तिलिस्म कैसे टूट पाता
हुस्न की गिरफ्त में दम घुटता गया
तख्तोताज जिन कदमो में कुर्बान
वो दोनो हाथों मित्रों में लूटाता गया

****

19. रोजगार मेला

जीते तो करे नही हारे तो करना नही
चुनावी मुहाने पर जुमले उछाल आएं
देश मे पशुमेले तो कई जगहो पर हुए
मोटाभाई हम रोजगार मेला कर आये

बिहार में तेजस्वी क्या हमसे टकराता
दस के सामने हम उन्नीस उछाल आये
सरकार बन गई पर दिया नही धेला
नीतीश के सर पे नाकामी डाल आये

मुद्रा लोन बांटे नौकरी रोजगार बांटे
नौकरी में अक्षम बेरोजगारी में अटके
योगी नौकरी की परीक्षा निकालते
परीक्षार्थी ढोने ट्रेन कम पड़ती जाए

देखो लोग पूछ रहे हमने क्या किया
बेरोजगारी का आलम नींव हिलाए
अगर सोचते चायवाले मंत्री हो जाते
हम बड़ा बताते विपक्ष बहका जाये

दिवाली तोहफे में दस लाख दे आऐं
घर घर नौकरी हो शिकायत नही रहे
समस्या विकट है जनता देख घबराए
निधान ये दे आये कि राहत हो जाये

****

20. आज साम्राज्य ले उड़े

सामाज्य था जनता के दिलों पर राज का
वे सत्ता हथिया गए अपना शौक मानकर
डुगडुगी पीटी जाती गली गली शोर हुआ
निकल पड़े ढूंढने साम्राज्य चोरी हो गया
दबे मुंह अफवाह उड़ी चूहे ज्यादा हो गए
कद क्या बढ़ा आज साम्राज्य उठा ले गए
हरकारे निकले पर कहीं खबर नही मिली
महाराज नींद में रहे चूहे साम्राज्य ले भागे
क्या अब चूहे ही सत्ता बन छाते जा रहे है
आज नौकरी पैसा और जेब कुतर जाते है
उठाए जो आवाज़ ये सवाल कुतर जाते है
बैंक पीसीयू संस्थानों में छेद बना जाते है
बच्चों की शिक्षा भविष्य पेपर कुतर रहे है
लोकतंत्र और सविंधान के पन्ने कुतरते है
क्या चूहों का कद भी इस कदर बढ़ गया
वे चाहेंगे तो क्या साम्राज्य उनका हो गया
इतिहास में वाकया ऐसा कभी नही हुआ
कुतरते रहे थे जो आज साम्राज्य ले उड़े

****

21. मूड़ी का मूड जो बदला

मूडी का मूड जब बदला जीडीपी हिला गया
जब तब हमारा बाज़ार उलटा सीधा कर गया
कभी आता वर्ल्ड बैंक कभी यूनिसेफ आता
पूंजीवाद की जड़े गहरी अपने लाभ गिनाता

हमें गरीब बता वह कुपोषित अनपढ़ बताता
सब बात का सार वो अपने चंगुल में फंसाता
लोन कभी ग्रांट्स देकर अपना निवेश बढ़ाता
महंगे साधन महंगे हथियार वो हमे बेच जाता

मुश्किल में जीते रहे हम गरीबी में लिपटे हुए
गरीब की थाली में छेदकर वो अमीरी दिखाता
दुनिया का चौधरी बनाया वह हमें बनाता गया
कुए का पानी जहरी मिनरल वाटर शुद्ध हुआ

रीति नीति धंधा भूले अनीति शोषण सिखाता
धंधे का धर्म भूल जाए यह मूल मंत्र सिखाता
क्यों लुटे जाते कब अर्थव्यवस्था हमारी होगी
रूखी सुखी खाकर फिर उनकी धौंस न होगी

वैश्वीकरण की चकाचौंध से दूर मेरा देश होगा
देश आजाद होगा फिर सोने की चिड़िया होगा

****

22. कांग्रेस आ रही है

मुखर समाज मे क्यों डर का माहौल है
संघर्ष न चुनौती फिर गांधी सड़क पर है
स्वाभाविक हाल या हाथीवाली चाल है
उद्घोष होता डरो मत कांग्रेस आ रही है

न हिंदुत्व का डर नही कोई घबराहट है
सर्वधर्म सर्वभाव जन में सीधा संवाद है
सहज सरल चाल मन जोड़ने के भाव है
उठे आवाज डरो मत कांग्रेस आ रही है

शत्रु मजबूत कदम कदम पर टकराएगा
हौंसला मजबूत है वह पीछे हट जाएगा
असत्य हारेगा सत्य का आज आगाज़ है
आए आवाज़ डरो मत कांग्रेस आ रही है

घर परिवार में उलझा वो क्या टकराएगा
गले रुँध रहे डर बने एजेंसियां टूट पड़ेगी
मसीहा सड़क पर जब पैगाम दे जाएगा
खामोशी से डरना मत कांग्रेस आ रही है

कितने ही गीले शिकवे अपनों में रहै है
किया कुछ ज्यादतियाँ नादानियाँ भी है
अपनो का अपनो के बीच संवाद रहैगा
जनता कहे डरो मत कांग्रेस आ रही है

जिसने गरीबी का मजाक नही उड़ाया
जो दूर न हुआ जनता के सरोकारो से
है कोई गांधी सरोकार बनाने आया है
देता संदेश डरो मत कांग्रेस आ रही है

मेरे वोट पर जीता मेरा वजूद नकार रहा
मेरी धरती पर मुझे विदेशी कहता गया
जैसे जैसे यहां मेरी पकड़ छूटने लगी है
गांधी कहता डरो मत कांग्रेस आ रही है

जीतेगा वही जो अपनो को जीत पायेगा
जोड़े दिलो को जो जमीन से जुड़ पाएगा
खामोश दिशाएं ये आगाज करने लगी है
शोर उठ रहा डरो मत कांग्रेस आ रही है

****

23. बरसो रे बदरिया सावन में

बरसे केजरी दिल्ली में मॉनसून बना गुजरात मे
बादल चढ़े आकाश भाजपाई देख अकुला रहे

दारू गाज गिरी मनीष पे सीबीआई आप से घिरे
बरसो रे बदरिया सावन का मौसम आया झूम के

नीतीश बरस रहै बिहार में तेजस्वी साथ देत रहै
केसीआर बरस गए बिहार में सभी ताल देत रहै

सूखे है जी तेबीस कोग्रेस मानसून की तलाश में
बरसो रे बदरिया सावन का मौसम आया झूम के

बीजेपी बाढ़ से त्रस्त है वाटर लॉगिंग होता जाए
आगे सड़क धराशायी बादल छंटने के इंतज़ार में

जोड़ तोड़ मे लगे है सभी मौसम से पार पाने में
बरसो रे बदरिया सावन का मौसम आया झूम के

गुलाम जमकर बरसे कोन्ग्रेस से रिश्ता तोड़ गए
पाला अब बदल गए बरसेंगे कश्मीर की ओर रे

पुरवैया ले गयी बदरा घुमड़ आये बादल जम्मू पे
बरसो रे बदरिया सावन का मौसम आया झूम के

****

24. ससन्मान जेल में धरे

आशा दाऊद आएगा माल्या आनेवाला है
यहां जेल सजाते वे ब्रिटेन में रुक जाते है

दिनों बाद खबर आई अनूठा होनेवाला है
ब्रिटेन कोर्ट से नीरव भारत आनेवाला है

वो आना चाहता है पर उसकी मजबूरी है
जेल की दुर्दशा ब्रिटिश कोर्ट में बताता है

रंग रोगन कराएं जेल सजाए स्वागत करे
दिनों बाद जैल में ये मेहमान आनेवाला है

पहले प्लेन चार्टर कर इन्तज़ार किया था
ब्रिटिश कोर्ट में वह हाथ से फिसल गया

फिर प्लेन चार्टर करे उसका ख्याल करे
सरकारी दामाद है ससन्मान जेल में धरे

****

25. हॉल में चप्पू चलाते रहै

सदा साथ दिया आरती घंटे बजाते रहे
आप न आए जब नाव आयी खतरे में
मौसम बदला आप नही उतरे मैदान में
आप बैठे रहे हॉल में चप्पू चलाते रहै

बड़े जतन से दिल मे घर बना डाला था
नाजो से जत्तनो से आपको पालते रहे
महल धराशायी हो जमीन दरकने लगी
आप हक़ीक़त में ख्वाब को देखते रहै

अपने ही अर्बन नक्सलो में जुड़ते गए
अपने पाले में कैसे वे लामबंद हो गए
था स्वर्ण अवसर वतन मजबूत करते
अवतार खतरे में आप हॉल छोड़ आते

हम प्रैक्टिस करे वे मुकाबला जीत गए
आप साथ देते हाथ पीछे बांध खड़े रहे
घिरने लगी थी कश्ती आंधी तुफानो में
आप व्यस्त रहै हॉल में चप्पू चलाने में

हाल के बाहर निकल सड़क पर आते
एसी की हवा से बाहर तूफान में आते
लेते मजा बेरोजगारी महंगाई डॉलर का
इडियट बॉक्स के बाहर निकल आते

अगर आप ही जो सड़क पर न आएंगे
हम आठ हजार करोड़ में न उड़ पाएंगे
अगर हम विदेश के दौरे पर न जाएंगे
कैसे जगह दिला देश विश्व गुरु बनाएंगे

अंदर बाहर की ताकते लामबंद हो रही
डूबने लगे तो तिनके का सहारा ढूंढ रहे
यह बिसात नही कोई कंप्यूटर गेम की
आते मैदान में हॉल से चप्पू चलाते रहे

****

26. सखी रे कान्हा नही आए

नित नित भोग लगाएं सखी रे कान्हा नही आए
प्रलोभन दे दे हारी नित नई करती रही तैयारी

नए नए भजन सुनाए कैसे कैसे तूमको रिझाते
ढूंढ ढूंढ रेवड़ी बांटी पर सैंया नही आते प्यारी

क्या तुम अब हनुमान भये कैसे तुम भूल गए
तुम रहे सर्व समर्थ ज्ञानी ये बात क्यों बिसारी

ले थाल खड़ी रही मैं पल पल राह निहार रही
दर्शन दो बनवारी अँखियां पंथ देख देख हारी

मेरा दर्द न जाने कोई इन्वेस्टमेंट क्यों न आए
कृपा बरस न पाए नित नए उपचार कर हारी

लाल कार्पेट लिए खड़ी मैं यह राह निहार रही
रहे शेख दुबई से द्वार पर मैं मान देती बिचारी

घेर घेर चीनी भी लाए पर सब धंधे छोड़ भागे
दुश्मन रहा चाहे जिंगपिंग सा हमने प्यार दिया

क्या हुआ हे स्वामी थोड़ा हिन्दू मुस्लिम हुआ
यह तो रीत है हमारी यह रीत है बहुत पुरानी

बड़े दिल से सोचो इससे जीत होती है हमारी

थोड़ा भय व्यापे प्रीत मजबूत हो जाये हमारी

आपसी तालमेल चले चाहे हम बहिष्कार करे
ये न चले सांस रुक जाए कैसे जीत हो हमारी

****

27. धर्मगुरु खीर खाये रे

जिस किसी ने जैसा चाहा वैसा ईश्वर पाया
जिसने जहां जैसा देखा उसने वैसा पाया रे

जल्दी जल्दी में जब ईश्वर से मिलने पहुंचे
तैयार नही थे इस रुप मे पूजा कर आए रे

समय पे जो पहुंचे राजमहल में दर्शन पाए
करे उपासना उस रूप में ईश्वर को ध्याय रे

जो कोई कुछ समय पर ही नही पहुंच पाए
जिसे स्वरुप दर्शन न मिला वे बांग देत रहे

जो जैसा ईश्वर देखे वैसी इबादत करते जाए
झगड़ा रहै धर्म का क्यों अपने बाड़े बनाये रे

धर्म के नाम दुनिया दूजे धर्मगुरु खीर खाये रे
चेले बाहर बैठे रह जाए छास हाथ न आय रे

कभी राजनीति में टपके कभी दूरी बनाये रे
बात हो जनता की मेहनत का पाठ पढ़ाये रे

योगगुरू तराजू ले एमएनसी पिछड़ जाए रे
जोड़तोड़ गोरखधंधे में धर्म महिमा गाए रे

****

28. अब नया लेशन दे जाओ

रामबाबू बिलियन ट्रिलियन सीख लिया
सेट्रल विस्टा मुश्किल था पर याद हुआ

स्मार्ट सिटी बुलेट ट्रेन शब्द भी सीख गए
साक्षर पहले थे आज शिक्षित भी हो गए

हर एक को घर मिले घर घर राशन होगा
आय दुगुनी हो रोजगार की दरकार नही

जीडीपी सीखा प्याज गैस डरा नही रहा
डॉलर महंगाई के फायदे भी जानते गए

स्वच्छ भारत ने कूडा फैलाना कम किया
सोशल मीडिया में ई-कूड़ा जरा फैल रहा

सांत्वना के शब्द नही मन की बात हो गई
हम खतरे में सही आप है कौन डरा सका

सुबहशाम टीवी पर आपकी आरती करे
भजन और गुणगान टीवी पर कर लेते है

बीच बीच मे मनोरंजन के क्षण ले आओ
मन की बात में अब नया लेशन दे जाओ

****

29. रामबाबू जन्मदिन मुबारक

खुशी मनाओ बस और चीते नही लाओ
जो घायल करते जीना दूभर करते जाए

जो चीते धन डकार देश से निकल भागे
उन्हें लाने में भी आप थोड़ा जोर लगाते

आप रहे बंगले में हजार रक्षको के साथ
जनता रहे बीच जंगल बाढ़ न लगा पाए

चीते टपक पडते लड़कियां उठाते जाए
रक्षक डंडे पीटते रहते कौन उन्हें बचाए

चीते जहांतहां सप्लाई लाइन काट जाते
विरोधियों के धनस्रोत सब सुखा डालते

चीते की नजरे विधायको पर पड जाए
अच्छी अच्छी सरकारे पानी भरती जाए

रामबाबू जंगल बस्ती का मेल है पुराना
जानवर इंसान सब अपनी हद में रहते

हद टूटी जनता का जीना मुहाल हुआ
हद हुई शिकारी रक्षक में मिलन हुआ

हम कायल हो गए आपकी प्रतिभा के

वोट कहीं पड़े सरकार आप बना जाए

क्या जरूरत थी नामीबिया से लाने की
विरोधी चीते आपके द्वार पर रहते खड़े

डर लगता है अब चीते की हर जात से
जन्मदिन मनाओ बस चीते नही लाओ

****

30. कौन मशाल थमा गया

बैठे थे दिल मे आग का दरिया लिए
उन हाथों में कौन मशाल थमा गया

क्या सोच वो धनुष बाण छीन गया
नादान था हाथो में मशाल थमा गया

जिस हाथ के साथ गठबंधन किया
वह हर पल साथ निभाने तैयार था

क्या मजाल कौन उन्हें डरा पायेगा
ले मशाल हाथ वह साथ खडा हुआ

उसने ऐसा अपना गठबंधन किया
अपनी आजादी दांव पर लगा गया

संगी साथी मंझधार में अटकते गए
राजा बना मगर गुलाम दिखता रहा

****

31. दो मोमबत्ती जला आये

(छावला हत्या कांड)

ये गलत है न वो गलत तब नसीब गलत था
न किसी ने गुनाह किया फिर अपराध हुआ
सन् बारह से बाइस तक यात्रा करदी हमने
देखते जाते कितना पानी गंगामे बहता गया

न छोटे कोर्ट गलत रहे न बड़ा ही गलत था
स्वच्छता अभियान में गंगा मैली होती गयी
मरनेवाला मरा और जिंदा जेल में पड़ा रहा
यक्ष प्रश्न गुनाह हुआ या सजा से बरी हुआ

कानून निर्माता और रखवाला पंगु बना रहा
विधायिका कोर्ट अपराधी के करीब दिखा
क्या अपराधी समाज मे खुला घूमता रहा
क्या न्याय ही बेगुनाह से अन्याय कर गया

'बलात्कार की सजा मौत'कानूनी किताब में
यह बड़ा सवाल रहा कौन मौत बाँटता गया
कानून का रखवाला बलात्कारी के साथ था
खुदा कैसे यह खेल तेरी आंखो समक्ष हुआ

नेता जनता बलात्कारी आशीर्वाद से धन्य हो
जब जब यहां चुनाव आए पेरोल पर रिहा हो
नेता अगर ये गुनाह करे कानून से बच जाए
चुनाव जीतकर बलात्कार पर कानून बनाए

कब तक पीड़िता न्याय की गुहार लगा पाती
कहे कोई बलात्कारी से अब समाज सो चुका
अपराधी चौराहे पर दो मोमबत्ती जला आए
मृतात्मा को शांति मिले न्याय दम तोड़ चुका

****

32. शोक दिवस दो दिन बाद

गला रुंधा हुआ सीने में भी दर्द है
हर जगह फैला हादसे का तांडव है

जख्म गहरा है दर्द बहुत घनेरा है
मगर कर्तव्य भी निभाते जाना है

रुको जरा ऐसी भी क्या जल्दी है
कर्तव्य पथ पर आगे भी जाना है

दो फीते काटे दो उत्सव मना डाले
शोक दिवस दो दिन बाद में करले

आकस्मिक में हम समस्या न बने
अकस्मात के काम पूरे होते जाए

सड़के दुरस्त हो कारण पता चले
अस्पताल दुल्हन सा सजाया जाए

बताना है शोक तो बताकर आएंगे
उनको संभलने का वक्त मिल सके

****

33. सच की जगह बची नही

सच मे दम कहाँ है सच में गॉसिप नही
सच का सोशल मीडिया में हंगामा नही

अब तो झूठ बोलने में शर्म आती नही
नए भारत में सच की जगह बची नही

आप संस्कार छोड़ झूठ बोलकर देखो
इसमे मजा बहुत और इसमे सजा नही

सच को समाचारों में जगह मिली नही
नए भारत में सच की जगह बची नही

कभी चीते को कान से पकड़के लाओ
कभी चीते को शेर बनके डराते जाओ

झूठ चलाओ समाज मे हंगामा लाओ
नए भारत में सच की जगह बची नही

तक्षशिला विश्वविद्यालय बिहार लाओ
सिकंदर महान को बिहार तक लाओ

मगर का बच्चा उसकी माँ चुरा लाओ
नए भारत में सच की जगह बची नही

****

34. वो चिराग लौटा लाई

अनहोनी की दास्तान कुछ ऐसी
वहां किसको किसका होश था
दो जवान कमाऊ बेटे नदारद थे
और बदहवास गुलशन भाग रही

लाशो के बीच कौन जिंदा बचा
उस पल हर कोई बदहवास था
रही थी उस खुदा की नियामत
टूटती सांसो के बीच लगी रही

मन्नते मांगी थी पल पल मां ने
आखिर उसकी मन्नत रंग लाई
आखिर लाशो के ढेर टटोलती
हतप्रभ वहां दो बच्चे पड़े मिले

मौत का इंतज़ार करते वे बच्चे
बेबसी का आलम कौन देखता
और बदहवास ढूंढ रही वह मां
हारती मां फिर जीत गई संग्राम

वो चिराग लौटा लाई यमराज से
ले भागी वह प्राइवेट अस्पताल
वहां किसका करती वो इंतज़ार
लगा था दांव पर उसका जहान

****

35. दर्द का पैमाना

एक दूसरे की पीठ खुजा जाते
आपसी साथ की कसम खाते
देश मे मित्रवाद का जन्म हुआ
पुल मित्रवाद की भेंट चढ़ गया

गुजरात ड्रग्स इम्पोर्ट हब बना
देश की सप्लाई का रूट हुआ
मित्रो का जाल पांव फैला रहा
कौन देश मे जहर फैला गया

हादसों में फ्रॉड नजर आता है
किसी को दर्द नजर आता है
फर्क नजरिए में नजर आता है
जैसी सोच वैसा नज़र आता है

ब्रिज पर मरने वाले तो मर गए
किसने कहा वे क्यों वहां गए
संवेदनहीनता की पराकाष्ठा थी
वे बोल पड़ते मेरे लिए मरे क्या

हादसा कोई जमीर हिला डाले
हादसा कहीं जमीन हिला डाले
संवेदना में कर्तव्य ढूंढा जाता है
संस्कार वैसा दर्द नजर आता है

सामाजिक कार्यक्रम रद्द करते
पर कोई कार्यक्रम न छोड़ पाए
हादसो में दर्द बदलता रहता है
क्या दर्द का पैमाना बदलता है

****

36. कौन मौत से खेला

कहां जबाव देही किसका नुकसान हुआ
एक्ट ऑफ गॉड या फ्रॉड पुल तो टूट गया

कौन बताता जनता को हेरिटेज पुल था
टिकट खरीदकर टूरिस्ट झूलने आते रहे

जर्जर होकर भी ये टूरिस्ट अट्रैक्शन रहा
सतर साल टिका चुनाव में क्यों गिर गया

मत कहो बच्चे झूले पुल को हिला डाला
तब पुल गिर गया वीडियो वाइरल किया

गुनाह ब्रिटिश का मजबूत ब्रिज बना दिया
चला डेढ़ सौ बरस थोड़ा इंतेज़ार न किया

इलेक्शन की तारीख का आगाज़ न हुआ
बिना दुरुस्ती खोला मरे तो मुआवजा दिया

नगर निगम ने नजदीकी ठेकेदार को दिया
गुनाह ओरेवा का बिना मंजूरी खोल दिया

छः सौ लोगो को उन्नीस में टिकट बेच लिया
किसने जमकर टिकट का ब्लेक कर दिया

बचाने वाले ने कब पूछा तेरा धर्म क्या था
कौन मौत से खेला जीवन सस्ता कर गया

37. भांग घुली है कुए में

भांग घुली है कुए में आप कानून लिखेंगे
बुलडोज़र लाएंगे स्कूल को ताला मारेंगे

यह आदेश गुनाह है स्कूल बंद कर दिया
शिक्षामंत्री नही हुए न्यायाधीश होते गए

ड्राइवर जब चार वर्षीय के रेप का दोषी
आठ सौ बच्चों का भविष्य तबाह किया

कितने रोजगार डूबे आपको दर्द न हुआ
रखवाले बने है तो अपना कानून लिखेंगे

जनता की आवाज़ पर अफसोस न करेंगे
लापरवाही हुई तो क्या नया आदेश करेंगे

देश मे कानून नही जो आप आदेश करेंगे
सांसद का बेटा दोषी तो संसद बंद करेंगे

अच्छे खासे सिस्टम को यूं तबाह न करो
होश में आ कानून के दायरे में रहा करो

कानून जगाओ कानून अपना काम करे
फतवे पढना बन्द हो सिस्टम सुधर जाए

****

38. टूटते समाज की घुटन

मेरी आवाज़ थी उसके जुल्मो के खिलाफ़
वो आया मेरी गली शायद मुझे डराने को

वो चार का ग्रुप आवाज़ में आक्रोश लिए
देखना चाहता खौफ में मुझे परिवार को

पास पडोस झांकते अर्द्धखुली खिड़की से
काश वे साथ आ जाते हज़ारो की भीड़ में

काश वे भी बन जाते मेरी सशक्त आवाज़
तब कैसे कोई फैलाता समाज मे आतंक

'काश' सदा ही पर यहां बेबस होता गया
कोई आगे न आया किसे दोषी करार देता

क्या मैं स्वयं अपने गुनाह का शिकार था
या गुनाह है उन छुपे पड़ोस में बैठे डर का

हम हज़ारो अकेले रहे वे चार थे जुड़े जुड़े
गुनाह ग्रुप के आवाज़ दबाने की चाह का

आपस में साथ खड़े रहने का ख्वाब पाले
मजबूरी की बेडिया हज़ारो पड़ोसियों की

हम मध्यवर्गीय महाअटवी में कैसे जी रहे
जहां परिवार सम्पति हमारी बेड़ियां बनी

घबराते रहे परिवार पर चोट के ख़्याल से
या बचाते पाई पाई जोड़ बनाये घरोंदे को

क्यों हज़ारो के झुंड पर भेड़िया टूट पड़ता
क्यों मेमना रहम की आस में गिड़गिड़ाता

दूसरे बेखबर उस खबर में तमाशा देखते
जैसे वे इस जंगल के सरमायेदार नही रहे

बुजुर्ग समाज बना गए साथ खड़े होने को
मगर डर का कद समाज से भी बड़ा हुआ

शायद यही कारण है समाज शोषण का
समाज का दोहन इसके ठेकेदार से हुआ

मगर जब कभी वक्त करवट लेकर आया
इसी धरती के आगोश से लावा फुट पडा

बेजुबान भी जब जब सडको पर टूट पडे
आतंकी शिकार होते बिलों में समाते गए
****

39. समयोचित संस्कार

जीवन केल पौध सा परत दर परत चढ़ा
जिया जो पल वह नई परत चढाता गया

खट्टे मीठे पलो की मैं माला पिरोता गया
समीक्षा में परत दर परत उतार भी रहा

कहते है बुजुर्ग धर्म ग्रंथ शाश्वत सत्य है
जिसकी शिक्षा काल खंड में अक्षुण्ण है

समय बदलता रहा पर धर्म नही बदला
संकीर्ण मनोवृति ने धर्म का ह्रास किया

मैं अपने संस्कारो की दुहाई देता रहता
जो संस्कार मेल नही खाए बदल गया

क्या देता विरासत में खुद स्थिर न रहा
सत्य की दुहाई दे असत्य में उलझ रहा

वक्त पर जो परत दर परत खोल बैठा
मासूम को सत्य पढ़ाता झूठ सिखाता

कितना बेबस रहा समय के बहाव में
कैसे कहूं समयोचित संस्कार न दिया

****

40. जो इतिहास लिखेगा

इतिहास निर्मम है सत्ता की छाह में पलता है
किसकी जड़े खोदता है किसे यह बख्शता है

हार्डवर्क क्यों हारेगा अब एमबीए न जीतेगा
उसे न्याय कब मिले जो धूप पसीने में तपेगा

उसकी इकॉनमी अच्छी थी आवाज़ उठ रही
पूछे मोदीनॉमिक्स में क्या कमी नजर आयी

जैसे कुम्हार चाक घूमाकर धरती घूमा रहा है
मेडम इकॉनमी घुमाती विश्व को घुमा रही है

हमारी आवाज़ थी पटेल को प्रधान न बनाया
कहते जहर न फैलता गडकरी क्यों न बनाया

डरेगा भी बिकेगा भी हमारे कहने में चलेगा
हम लिखने को कहेंगे इतिहास वही लिखेगा

हार्वर्ड वाला बोलता है इतिहास न्याय करेगा
मोटाभाई कैसे पकडेंगे जो इतिहास लिखेगा

....

41. बस एक चेहरा आप है

रात आठ बजे रामबाबू ने ये ऐलान किया
क्या ढूंढते चेहरों में वोट कमल को देना है

हर सीट पर अब एक भी आदमी न होगा
सब जगह पर बस कमल ही कमल होगा

सत्ता होगी संविधान होगा इलेक्शन होगा
केंडिडेट से क्या काम कमल भला करेगा

संसद कैबिनेट होगी पर चेहरा मेरा होगा
चेहरे पर चेहरा होगा वो चेहरा मेरा होगा

भाग भागकर भागो कहां भाग पाओगे
जहां जाओगे हमे पाओगे वोट हमे दोगे

जो बोले हम बोले वह यहां कानून होगा
जो हम कहे करे वह यहां का धर्म होगा

ये मंडी में हम खरीददार यहां जो बिकेगा
न कष्ट करना इस मंडी में भाव हम करेंगे

त्रासदी में तुम न रहना न दूसरा जीतेगा
क्या देखो चेहरों में हर चेहरा मेरा होगा

मोटाभाई बोलते रामबाबू आप महान है
लोगो के हुजूम में बस एक चेहरा आप है

कमल पर कमल का डबल इंजन होगा
तुम्हारा जीवन रथ बस कमल से चलेगा

क्या बोलते जहां जाइयेगा हमे पाइयेगा
बाग में पका फल हमारी झोली में गिरेगा

****

42. बस थोड़ी जगह दिला दे

तेरे कद के आगे बौने लगते रहै है
थोड़ा इस कद को भी अब बढा दे
गाड़ी के पीछे भागकर थकने लगे
गाड़ीवाले अब तो गाड़ी में बिठा दे

बड़ी आरज़ू से यह पद पाया था
जैसे बोला वैसा इसको संवारा था
फोटोनॉमी से हटकर बाहर खड़े है
अब फ़ोटो में थोड़ी जगह दिला दे

तेरी फोटो में थोड़ी जगह पाएंगे
इतिहास में हम अमर हो जाएंगे
अब कृपा कटाक्ष थोड़ा हो जाए
गाड़ी में बस थोड़ी जगह दिला दे

तेरी गाड़ी के पीछे भागते भागते
अबतो हिम्मत जवाब देने लगी है
कदमो में जगह दे धन्य हो जाएंगे
दिल मे नही अब गाड़ी में बिठा दे

खुशी से विष भी गले लगाया था
वक्त आया खून के घूंट पी गए थे
हम और भी अपमान सह जाएंगे
गाड़ीवाले अब तो गाड़ी में बिठा दे

****

43. कफन बदले जाए

मोटाभाई आखिर कब तक हम
दिन में चार चार ड्रेस बदलते रहे
क्या यह सरासर नाइंसाफी नहीं
चारो और गंदगी का माहौल रहे

अभी अस्पताल में फ़ोन लगाए
हमारी ड्रेस के अनुरूप बन आए
दीवारे संवार दे रंग रोगन लगाए
लाश के अब कफन बदले जाए

अस्पताल अगर बीमार दिखेगा
घायलों का क्या इलाज करेगा
कपड़ो से सिस्टम में जान आए
चेहरा इसका बदल दिया जाए

अस्सी करोड़ को अनाज बांटा
हमने कितने चेहरे चमकाए है
देख दिल दुख से फटा जाता है
क्यों ये चेहरा नही चमका पाए

बाबुओ की क्लास लगाई जाए
शोक में हम सजधज कर जाए
ये भी लाशो घायलों को सजाए
हमारे स्वागत में सजकर आए

****

44. शेर की सवारी कर बैठे

सदियो में नही चला जनता में वो सिक्का चला
अच्छे दिन आते नही मगर उन्हें सपना दिखता

डीज़ल डॉलर सस्ता है कालाधन आता बताते
दो घंटे में ड्रेस बदले दुनियाभर के ठाठ उठाते

खेल मजे का ईडी सीबीआई का डर दिखाते
कौन हमें आंख बताए हमसे सब खौफ खाते

निकल पड़े इस राह पर शेर से थोड़ा डर जाते
मोटाभाई मजा आया शेर की सवारी कर बैठे

रामबाबू दूर निकल आए वक्त हुआ लौट चले
चढे शेर की पीठ पर चिंता होती उतरेंगे केसे

****

45. रामबाबू की दाढ़ी

क्या मुकाबला करे रामबाबू की दाढ़ी का
बिन बोई खेती नही जो कटाई से रह गई

बड़े जतनो से पाला खाद पानी दे डाला
सालो लगे इसमे तब यह शेप मिल पाया

दूर से नाई बुलाये विदेशी एक्सपर्ट आए
मुश्किल रूप बना टेगोर सा चेहरा खिला

इतिहास से चेहरा उठा जवाब दिखा दो
क्या मुकाबला करोगे नायाब अंदाज़ का

टकराने के सपने और तुम नही देखना
मुकाबला नही है रामबाबू के अंदाज़ का

****

46. सत्ता और पूंजी की जोडी

सत्ता गरीब जनता का बेटा था
सत्ता संस्कारी एवं सुसंस्कृत था
गरीब से सत्ता को ताकत मिली
उसके सपनो का विस्तार हुआ

पूंजी सम्पन्न घराने की बेटी थी
अभिमानी थी नाजो से पली थी
जो चाहे खरीदने की ताकत थी
विषमता में समाज का विष थी

ग़रीब अमीर का मेल नही था
पूंजी को गरीबी से नफरत थी
मगर दुकान जनता से चलाती
सत्ता को फांसना जरूरत थी

सत्ता जनता के लिए जन्मा था
सत्ता पूंजी को डराता रहता था
पूंजी सत्ता को नियंत्रित करेगी
ऐसा ख्वाब वो पालकर रखती

जब संस्कारो का ह्रास हो गया
सत्ता अमीरी के ख्वाब देखता
गरीबी से पीछा छुड़ाना चाहता
सत्ता का झुकाव पूंजी से बढ़ा

पूंजी को पल का इंतज़ार था
सत्ता से प्यार का श्रीगणेश था
आपसी वैर भुला बैठे थे दोनों
दो में प्यार का तालमेल हुआ

आज सत्ता पूंजी ऐश करते है
हाथ मे हाथ डाले सैर करते है
गरीब जनता अभावो में जीए
बेटा न होने का अहसास करे

बेटा अमीरो का घरजमाई है
शायद उनको खुशी होती रहै
बेटे का हर गुनाह भूल जाते
वे नज़रअंदाज़ करके रह गए
****

47. डर डायन बनकर आ रहा है

वर्षो पहले दफनाया आज जिंदा नजर आता है
गमगीन माहौल दिल को चीर रही हर आहट है
हंसी खुशी के गुलदस्ते रहे क्यों आज वीराने है
प्राण हलक में अटके डर डायन बन आ रहा है

साम्प्रदायिकता का पुराना राग ठंडा पड रहा है
अंगारे राख में तब्दील हुए फूल मुरझाने लगा है
मयंक की मद्धिम चांदनी में दिल घबरा रहा है
दिल पर हावी हो डर डायन बनकर आ रहा है

वक्त आया है आज लड़ पडो अदृश्य दुश्मन से
वह कब टूट पडेगा अजीब खौफ का माहौल है
न गालीगलौज न लडे जिंदा लोगो की रीत नही
परछाई से घबराते डर डायन बनकर आ रहा है

हर आहट पर कान लगाना चिरशांति छा रही है
डरना नही एकजुट रहना विश्वगुरु आगाह करे
कौन ताकत देता अर्बन नक्सल आउटसोर्स हुए
हथियार हमसे ले डर डायन बनकर आ रहा है

हिंदुत्व की हवा दी हमने मगर उनमे डर कहां है
ट्रोल सैना थककर चूर हो गई अब सोने लगी है
पप्पू से घबराने लगे है आज पप्पू डराने लगा है
ये रात जागते बीते डर डायन बनकर आ रहा है

****

48. नया मोबाइल

जब एक नया छह बाइ तीन लाया
हाथ हमारे नायाब हथियार आया
भर दिया कारतूस आई लव यू का
बीबी निशाने पर ले जब दाग दिया

पहला एक्सपेरिएंस कुछ ऐसा रहा
निशाना चुका ग्रुप को हिट कर गया
तूफान आया सब कुछ हिला दिया
बीबी दूर चिढाए कहे मजा आ गया

व्हाट्सअप पर जूते चप्पल जो चले
गाली का गुलदस्ता भी दर्शन दे रहा
पापा मम्मी की डांट ने ऐसा हिलाया
जैसे कोई महंगा तोहफा चुरा लाया

काश कोई उसे हल्के में भी ले पाता
लव यू बेटा से भी रिस्पांस कर जाता
क्या हुआ जो एक निशाना चूक गया
और चलाऊँ थोड़ा बेशरम होता गया

मुस्कान महंगी हुई कैसे अब मुस्काए
जीवन की नोंकझोंक में ये पल आये
छह बाइ तीन एकांत में मुस्कान बांटे
धन्य हुए भाग हमारे ये अवतार हुआ

....